

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया (राज.)

क्षेत्र के ग्रामीण परिवेश में कृषि के विकास के लिये कृषि की नवीनतम प्रविधियों, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण सम्बन्धी विविध प्रकार की गतिविधियां संचालित कर क्षेत्र के किसान परिवारों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से वर्ष 1994 में कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया की स्थापना की गई। परन्तु कृषि विज्ञान केन्द्र ने वास्तविक रूप से अपना कार्य करना वर्ष 1998 से तकनीकी स्टॉफ की नियुक्ति के साथ ग्रामोत्थान विद्यापीठ के अध्यक्ष चौधरी अभय सिंह चौटाला के सशक्त नेतृत्व में प्रारम्भ किया।

आधारभूत संरचना का विकास

क्रम सं.	विवरण	निर्माण वर्ष	लागत राशि (लाख)
1	प्रशासनिक भवन	1997-98	15.28
2	श्रेसिंग फ्लोर	2004-05	1.00
3	मृदा एवं जल परीक्षण प्रयोगशाला	2004-05	8.31
4	फार्म फैनसिंग	2005-06	8.10
5	स्टॉफ आवास – 6	2005-07	25.95
6	फार्म गोदाम	2006-07	1.38
7	बीज प्रसंस्करण इकाई व बीज गोदाम	2007-08	17.24
8	भूमिगत पाईप लाईन		
9	बूंद बूंद सिंचाई प्रणाली व रैनगन		
10	पादप स्वास्थ्य चिकित्सालय	2010-11	10.00
11	जल संग्रहण तालाब (डिग्गी)	2011-12	10.00
12	ट्यूबवैल		
13	हाई टैक नर्सरी	2013-14	25.00
14	वर्षा जल संग्रहण प्रणाली	2018-19	नगरपालिका, संगरिया द्वारा निर्मित
15	बत्तख पालन इकाई		0.02
16	खरगोश पालन इकाई		0.04
17	स्वचालित मौसम पूर्वानुमान इकाई	2021-22	भाकृअनुप, द्वारा निर्मित
18	पशु पालन इकाई (अनुसूचित जाति उपयोजनान्तर्गत)	2021-22	10.75
19	पोल्ट्री अण्डा हैचिंग इकाई (अनुसूचित जाति उपयोजनान्तर्गत)	2021-22	1.65
20	प्राकृतिक खेती	2022-23	2.36
21	प्रसंस्करण इकाई एवं मिनि दाल मिल (अनुसूचित जाति उपयोजनान्तर्गत)	2022-23	7.70
22	बायोगैस	2024	

प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण इकाईयों का विकास

क्र.सं.	विवरण	निर्माण वर्ष	क्षेत्रफल/ क्षमता	लागत राशि (लाख)
1	मत्स्य प्रदर्शन इकाई	2001-02	0.20	5.25
2	वर्मी कम्पोस्ट इकाई	2004-05	80 M ²	0.75
3	किन्नो बाग	2005-06	2.5 hac.	1.00
4	मधुमक्खी पालन इकाई	2007-08	4 Box	0.10
5	क्रॉप केफेटरिया	2014-15	0.5 hac.	0.10
6	अजोला उत्पादन इकाई	2014-15	60 Feet ²	0.15

7	न्यूट्रीशनल किचन गार्डन	2014-15	150 Feet ²	0.04
8	मशरूम उत्पादन इकाई	2015-16	25 Quintal. Capacity	
9	अलंकृत मछली उत्पादन इकाई	2015-16	800 Feet ²	0.10
10	पशु स्वास्थ्य जांच इकाई	2015-16	35 Feet ²	
11	बकरी पालन इकाई	2016-17	7562.5 Feet ²	6.05
12	मुर्गी पालन इकाई	2016-17	700 Feet ²	
13	समन्वित कृषि प्रणाली	2017-18	1.00 hac	
14	तकनीकी सूचना केन्द्र	2017-18	656 Feet ²	2.32
15	वेस्ट डिकम्पोजर इकाई	2017-18	1000 Botel	0.03
				5
16	किन्नौ बाग (Ridge bed method)	2020-21	1.00 hac	3.46
17	हर्बल गार्डन	2022-23	0.25 hac	

- मछली पालन प्रदर्शन इकाई
- वर्मी कम्पोस्ट इकाई
- किन्नौ प्रदर्शन इकाई
- मधुमक्खी पालन प्रदर्शन इकाई
- क्राँप केफ्टेरिया
- अजोला इकाई
- न्यूट्रीशनल किचन गार्डन
- मशरूम उत्पादन इकाई
- अलंकृत मछली पालन इकाई
- पशु स्वास्थ्य जांच इकाई
- बकरी पालन इकाई
- मुर्गी पालन इकाई
- समन्वित कृषि प्रणाली
- तकनीकी सूचना इकाई:—
- केन्द्र की वेबसाइट
- वेस्ट डिकम्पोजर
- रेजड बैड किन्नौ प्रदर्शन इकाई
- हर्बल गार्डन

प्रत्येक इकाई की तस्वीर भी साथ लगाई जाएंगी ।

कृषि विज्ञान केन्द्र की उपलब्धियां

- कृषक, कृषक महिलाओं, युवक— युवतियों तथा प्रसार कार्यकर्ताओं के लिये लघु या व दीर्घावधि व्यवसाय परक प्रशिक्षणों का आयोजन करना कृषि विज्ञान केन्द्र का मुख्य कार्य है। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से स्वरोजगार की स्थापना तथा कृषि व्यवसाय में आय बढ़ोतरी करने के लिये उपरोक्त को कृषि की नवीनतम तकनीकी से परिपूर्ण करना है। गत 25 वर्षों में कृषि विज्ञान केन्द्र ने 1606

प्रशिक्षण कार्यक्रमों (लघु व दीर्घावधि) के माध्यम से 43587 कृषक, कृषक महिलाओं, युवक-युवतियों तथा प्रसार कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

- नवीनतम कृषि तकनीकी की उत्पादन क्षमता व अन्य विशेषताओं को किसानों व प्रसार कार्य कर्ताओं के समक्ष प्रदर्शित करने के उद्देश्य से गत 25 वर्षों में 6691 प्रदर्शनों का आयोजन कर जिले के किसानों को लाभान्वित कर नवीनतम कृषि तकनीकी का प्रसार किया गया।
- कृषि तकनीकी के परिष्करण व पुनःमूल्यांकन हेतु विभिन्न विषयों पर 494 प्रक्षेत्र परीक्षणों का आयोजन 1551 किसानों के खेतों पर किया है और उस परिष्कृत तकनीकी का प्रचार प्रसार जिले के किसानों में किया गया है।
- जिले के किसानों में नवीनतम कृषि तकनीकी के त्वरित व प्रभावी प्रचार प्रसार के लिये गत 25 वर्षों में विभिन्न प्रसार गतिविधियों का आयोजन निम्नानुसार किया गया है।

क्र.सं.	प्रसार गतिविधि	संख्या	लाभान्वितों की सं.
1	प्रक्षेत्र दिवस	242	12390
2	किसान मेला	40	40564
3	किसान गोष्ठी	158	7111
4	फिल्म शो	1434	23424
5	टीवी शो	31	Not fixed
6	रेडियो टॉक	148	Not fixed
7	प्रदर्शनी	51	106485
8	किसान दिवस	19	3418
9	नैदानिक यात्रा (Diagnostic visit)	207	3893
10	वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के खेतों का भ्रमण	3292	42059
11	किसानों का कृषिके पर आगमन	50431	50431
12	अभियान (Campaign)	6	Not fixed
13	एक्सपोजर विजिट (Exposure visit)	102	4617
14	पशु स्वास्थ्य कैम्प	28	1637
15	विधि प्रदर्शन (Method Demonstration)	485	11401
16	कार्यशाला	27	656
17	तकनीकी सप्ताह	5	1030
18	समूह बैठक	179	7367
19	महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन	103	10178
20	आलेख (पॉपुलर आर्टिकल)	630	Not fixed
21	अनुसंधान पत्र	23	Not fixed
22	कृषि साहित्य (पैम्फलेट्स, फोल्डर इत्यादि)	108	Not fixed
23	न्यूज पेपर कवरेज (News Paper Coverage)	1900	Not fixed
24	टेलीफोन हेल्पलाईन	218909	218909
25	व्याख्यान (Lecture delivered as resource person)	6306	65279
26	सफलता की कहानी / केस स्टडी	191	Not fixed
27	कृषि तकनीकी क्लब की बैठक	148	3382
28	स्वयं सहायता समूह की बैठक	111	1509
29	फार्मर फील्ड स्कूल	13	455

30	रेडी कार्यक्रम	73	1296
31	इंटरनशिप प्रोग्राम	6	6

- बीज एक बुनियादी आदान है और अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये प्रमुख साधन है। यदि उन्नत किस्म का प्रमाणित बीज उपयोग में लाया जाये तो यह 20–25 प्रतिशत उपज में वृद्धि कर सकता है। इसलिये कृषि विज्ञान केन्द्र संगरिया ने गत 25 वर्षों में विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों का 2497.42 कुन्तल बीज पैदा कर जिले के किसानों को उपलब्ध कराया है।
- किसानों को उच्च गुणवत्ता के रोग व कीट मुक्त फल व सब्जियों की पौध उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2013–14 में हाई टैक नर्सरी की स्थापना की। इस नर्सरी के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र संगरिया ने गत 10 वर्षों में 1594803 फलवृक्षों व सब्जियों की पौध किसानों को उपलब्ध कराई।
- कृषि विज्ञान केन्द्र संगरिया वर्ष 2001 से 'केशव खेती' नामक त्रैमासिक कृषि पत्रिका का हिन्दी भाषा में नियमित प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक (The Registrar of Newspaper of India) के यहां पंजीकरण सं. RAJHIN/2001/11260 से पंजीकृत है।
- कृषि विज्ञान केन्द्र संगरिया की मृदा एवं जल परीक्षण प्रयोगशाला में वर्ष 2005 से किसानों के खेतों की मिट्टी व ट्यूबवैल के पानी का परीक्षण कर किसानों को उसके उचित उपयोग की सलाह दे रहा है। गत 18 वर्षों में मृदा व जल के 40508 नमूनों का परीक्षण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र की जिले के कृषकों के लिये विशेष उपलब्धियां

- भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी से प्राप्त जई की किस्म JHO-822 (Bundael jai 822) को कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा अपने प्रदर्शनों में शामिल किया गया। इससे प्राप्त परिणामों तथा ग्राह्य परीक्षण केन्द्र हनुमानगढ़ व श्री करणपुर के द्वारा प्रस्तुत किये गये आंकड़ों के आधार पर कृषि खण्ड श्रीगंगानगर की क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति द्वारा कृषि जलवायवीय खण्ड श्रीगंगानगर की रबी 2017–18 की Package of practice (POP) में शामिल किया गया। चारे की इस जई के उपयोग से पशुओं के स्वास्थ्य तथा दूध की गणना एवं गुणवत्ता में लाभ प्राप्त हुआ। किसानों की आय वृद्धि में सफलता प्राप्त हुई।
- चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित मूंग की किस्म MH-421 को वर्ष 2016 में कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया के कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में शामिल किया गया। इसकी अच्छी उपज व रोग प्रतिरोधकता के परिणाम के आधार पर इस किस्म को कृषि खण्ड श्रीगंगानगर की क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति द्वारा कृषि जलवायुवीय खण्ड श्रीगंगानगर की खरीफ 2019 की Package of Practice (POP) में शामिल किया गया है। वर्तमान में यह मूंग के अन्तर्गत बोये जाने वाले कुल क्षेत्र के 54 प्रतिशत भाग में बोई जा रही है। इस किस्म की पैदावार अधिक होने से किसानों की आय बढ़ी।
- चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार की सरसों की किस्म RH-749 के कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया ने वर्ष 2015 से 2022 के बीच 778 प्रदर्शन लगाये। इसके परिणाम संतोष जनक रहे। यह किस्म किसानों के लिये सरसों की लक्ष्मी (RH-8812) किस्म का विकल्प साबित हुई है। क्योंकि लक्ष्मी (RH-8812) किस्म किसानों में लोकप्रिय है लेकिन काफी पुरानी (वर्ष 1997 में अधिसूचित) हो चुकी है। यह किस्म सामान्य से अधिक दूरी पर बुवाई के लिये (लाईन से लाईन की दूरी 60 सेंटीमीटर तक) उपयुक्त पाई गई है। वृहद अन्तरण पर बोई जाने के कारण इस किस्म में सरसों के स्कलेरासिया तना गलन रोग का प्रकोप कम होने के कारण किसानों द्वारा इसकी बुवाई का क्षेत्र फल बढ़ाया गया।
- क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर से विकसित चने की GNG-1581 (गणगौर) व GNG-1958 (मरुधर) किस्मों को कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा अपने प्रदर्शनों में शामिल किया गया और किसानों को इनके गुणों से अवगत कराया गया। परिणामस्वरूप आज GNG-1581 (गणगौर)

किस्म हनुमानगढ़ जिले के सिंचित चना उत्पादन क्षेत्र के 60 प्रतिशत क्षेत्र में उगाई जाने लगी है, तथा GNG-1958 (मरुधर) किस्म भी किसानों में लोकप्रिय हो रही है।

- गेहूं फसल में तथा Stress Management तथा नमी प्रबन्धन के लिये केन्द्र द्वारा किसानों के खेतों पर माइकोराइजल कवक {Vascular arbuscular mycorrhial fungi (VAM)} का गेहूं में उपयोग हेतु प्रदर्शन लगाने पर पाया कि माइकोराइजल कवक के 10 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करने पर यह पाया गया कि गेहूं की उपज में बिना कमी किये एक सिंचाई की बचत की जा सकती है। उक्त परिणामों के आधार पर ही किसानों को VAM के उपयोग की सलाह दी गई। वर्तमान में, सिर्फ गेहूं में ही नहीं अन्य फसलों में भी किसान वाम का उपयोग कर रहे हैं। हनुमानगढ़ जिले में प्रति वर्ष अकेले T. Stanes & Company Ltd. के द्वारा ही लगभग 160 टन वाम की बिक्री की जा रही है, जोकि 16000 हैक्टर भूमि के लिये पर्याप्त है। इसके अलावा J.U. Agri Science Pvt. Ltd., Prabhat Fertilizers Pvt. Ltd., International Panaacea Limited इत्यादि कम्पनियां भी जिले में वाम की आपूर्ति करती हैं।
- मशरूम उत्पादन तकनीकी को किसानों में प्रचलित करने व इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा गत 9 वर्षों में 644 युवाओं के लिये 18 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इनमें से 65 युवाओं ने मिलकर मशरूम उत्पादन की 50 इकाईयां स्थापित कीं और 180 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया। इन इकाईयों से जिले में प्रति वर्ष 1.61 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होता है तथा इन युवाओं से प्रेरित होकर जिले के अन्य बेरोजगार युवा इसे स्वरोजगार के रूप में अपना रहे हैं।
- मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने व इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा गत 9 वर्षों में 573 युवाओं के लिये 15 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इनमें से 120 युवाओं ने मिलकर मधुमक्खी 69 इकाईयां स्थापित की और 296 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया। इन इकाईयों से जिले में प्रति वर्ष 207 मेट्रिक टन शहद का उत्पादन होता है और 3.10 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। मधुमक्खी पालन को क्षेत्र के युवाओं द्वारा खेती के साथ एक सहायक धन्धे के रूप में अपनाया है। जिससे उन्हें एक अतिरिक्त रोजगार प्राप्त हो रहा है। इसके साथ 140 मधुमक्खी पालकों को नैशनल मधुमक्खी बोर्ड से भी प्रमाणित करवाया।
- मछली पालन को व्यवसाय के रूप में विकसित करने व जलसंग्रहण के निर्मित बनी डिगियों से अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा गत 9 वर्षों में 561 युवाओं के लिये 17 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इनमें से 94 युवाओं ने मछली पालन को अपना व्यवसाय बनाया है और प्रति वर्ष 50 हजार से 1 लाख की आय प्राप्त कर रहे हैं। युवाओं का रुझान इस ओर बढ़ रहा है।
- बकरी पालन के व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया पर वर्ष 2016-17 में बकरी पालन इकाई की स्थापना की गई जिसमें सिरोंही नस्ल की बकरी रखी गई। गत 7 वर्षों में बकरी पालन विषय पर 16 प्रशिक्षण के माध्यम से 612 कृषक / युवाओं को प्रशिक्षण दिया गया। तदुपरान्त 47 बकरी पालन इकाईयों की स्थापना हुई। आज ये बकरी पालक 50000 से 150000 रुपये प्रति वर्ष आय प्राप्त कर रहे हैं।
- वर्ष 2016-17 में कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया पर मुर्गी पालन इकाई की स्थापना की गई जिसमें प्रतापधन, कड़कनाथ व आर आई आर नस्ल की मुर्गियां रखी गई। मुर्गी पालन को व्यवसाय तथा सहायक धन्धे के रूप में अपनाने के लिये मुर्गी पालन विषय पर 12 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 230 लोगों को प्रशिक्षण दिया गया। तदुपरान्त 97 मुर्गी पालन इकाईयों की स्थापना हुई। आज ये मुर्गी पालक 10000 से 100000 रुपये प्रति वर्ष की आय प्राप्त कर रहे हैं। मुर्गी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने एवं किसानों को प्रेरित करने के लिये अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों को आयोजन किया जाता है। जिससे क्षेत्र के युवा बेरोजगारों को रुझान इस ओर देखा गया है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा ग्रामीण परिवारों के पोषण एवं स्वास्थ्य के सुधार तथा भोजन में फलों व सब्जियों के समावेश के लिये 150 वर्गफीट का पोषण वाटिका नमूना तैयार किया गया। इस नमूने को आधार मानते हुये केन्द्र द्वारा अब तक 255 प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन लगाये गये

तथा इस तकनीकी का प्रसार प्रसार कार्यकर्ताओं के माध्यम से क्षेत्र में प्रसार किया गया जिसके प्रभाव से किसान परिवारों के स्वास्थ्य में सुधार आया, धन की बचत हुई तथा ताजे फल व सब्जियों का भोजन में समावेश हुआ। परिणामस्वरूप आज पोषण वाटिका को लगाने का कार्य काफी प्रचलित है तथा केन्द्र इसे सम्पूर्ण जिले के किसानों के स्थापित करवाने हेतु प्रयासरत है।

- कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया द्वारा वर्ष 2019 से मौसम आधारित कृषि सलाह जारी की जा रही है। इस कार्य के लिये भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा मौसम पूर्वानुमान इकाई की स्थापना की गई है। इस इकाई की स्थापना के बाद हर मंगलवार व हर शुक्रवार को आगामी पांच दिनों की मौसम पूर्वानुमान की एडवाइजरी जारी की जाती है। जिससे प्रत्यक्ष रूप से जिले के 32010 किसान लाभान्वित हो रहे हैं। किसानों को उचित समय पर पूर्वानुमान व कृषि सलाह दी जाती है। कृषि विज्ञान केन्द्र के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्रा.वि. संगरिया के सम्मानित सदस्यों की सूची